International Journal of Applied Research 2015; 1(9): 174-176

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(9): 174-176
www.allresearchjournal.com
Received: 21-06-2015
Accepted: 24-07-2015

डॉ शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय महाविद्यालय ढलियारा कांगडा हि प

Correspondence:
डॉ शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय महाविद्यालय ढलियारा कांगडा हि प

बिहारी की अलंकार योजना

डॉ शिवदत्त शर्मा

हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य कवि बिहारी जहां अन्य गुणेां के कारण प्रसिद्ध हैं वहीं अलंकार योजना में भी उनका कोई मुकाबला नही हैं।काव्य और अलंकार का मणिकांचन संयोग जगत प्रसिद्ध है। कविवर सुमित्रानन्दन पन्त ने ठीक ही कहा है– अलंकार केवल वाणी की सजावट के लिए नही हैं वे भावाभिव्यक्ति के विशेष द्वार हैं।

अलंकार शब्द की परिभाषा कई विद्वानों ने की हैं।अलम् उपसर्ग कृ धातु एवं प्रत्यय के योग से अलंकार शब्द बना है संक्षेप से कह सकते हैं कि अलंकार रस भावादि को अलंकार उत्कर्ष प्रदान करते हैं। भोजराज ने कहा है– जिस प्रकार अंजन की कालिमा दीर्घ नेत्रों में शोभित होती है मुक्ताहार उन्नत और पीन पयोधरों पर शोभा देता है उसी प्रकार अलंकार की शोभा भी सुन्दर भावाभिव्यक्ति में सहायक होने पर होती है।इस तरह स्पष्ट है कि अलंकार रस भाव आदि के उत्कर्ष विधायक रूप गुण क्रिया आदि को अनुभूति की तीव्रता प्रदान करने वाले होते हैं। अग्निपुराण में भी स्पष्ट उल्लेख है कि अलंकारों से रहित सरस्वति विधवा नारी के समान है–

अलंकार रहिता विधवेव सरस्वति 1

भरत मुनि ने भी कहा है कि उपमा रूपक दीपक तथा यमक आदि अलंकार नाटक के लिए सहायक हैं। भामह दण्डी वामन आदि अनेक आचार्यों ने अलंकारों के महत्व को स्वीकार किया है। अलंकारों का महत्व इस बात से प्रतिपादित हो जाता है कि अलंकार सम्प्रदाय नाम से एक स्वतंत्र साहित्यिक सम्प्रदाय है। भामह दण्डी आदि आचार्यों ने भी अलंकारों की अनिवार्यता को खुल कर प्रतिपादित किया चाहे आगे चलकर ग्याहरवीं शताब्दी में आचार्य मम्मट ने अंलकारों की अनिवार्यता को शिथिल कर दिया–

तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृति पुनः क्वापि । 2

आगे चलकर तेहरवीं शताब्दी में अलंकार वादी जयदेव ने पुन अलंकारों की अनिवार्यता पर बल दिया–

अंगीकरोति यः काव्यं शब्दार्थावनलंकृति।
असौ न मन्यते कस्मादनुष्मनलंकृति ।।

अर्थात् यदि कोई व्यक्ति अलंकार विहीन शब्द अर्थ को काव्य मानता है तो वह यह क्यों नहीं मान लेता कि आग भी शीतल होती है। रीति काल में पुनः एक बार फिर अलंकारों को गौरव पूर्ण स्थान प्राप्त हुआा अपने आश्रयदाताओं को कविता के माध्यम से प्रभावित करने की होड सी लगने के कारण कविता अलंकारों के भार से दबने सी लगी थी। 3

बिहारी भी इसी रीति काल में हुए अतः स्वाभाविक रूप से अप्रभावित हुए बिना कैसे रह सकते थे।उन्होंने सतसई में अलंकारों का खुल कर प्रयोग किया है कई स्थानों पर तो अलंकारों को बलात् लादा गया स्पष्ट प्रतीत होता है। उनका एक भी दोहा ऐसा नहीं है जिसमें अलंकारों की विशेष योजना न हो। डॉ राम सागर त्रिपाठी ने ठीक ही कहा है– बिहारी का एक भी दोहा ऐसा नहीं है जिसमें चमत्कार उक्ति की विचित्रता न हो अथवा किसी अलंकार का प्रयोग न किया गया हो।

इसी संदर्भ में डॉ हरि वंश लाल शर्मा ने भी कहा है कि यद्यपि बिहारी भी इस आंधी से बच नहीं पाए हैं फिर भी यह सत्य है कि बिहारी पर असर केवल त्वचा पर पडा हृदय पर नहीं यही कारण है कि उनका मुख्य उद्देश्य रसास्वादन ही है न कि केवल चमत्कार आदि । बिहारी ने साधन रूप में ही अलंकारों का अधिक प्रयोग किया है अलंकार उनके दोहों का स्वाभाविक भावोत्कर्ष करते प्रतीत होते है।

बिहारी के दोहों में सभी प्रयोग दिखाई देते हैं।अलंकारों की तीन श्रेणियां स्थपित हैं।3
क – शब्दालंकार ख– अर्थालंकार ग – उभयालंकार

बिहारी ने सभी अलंकारों का खुल कर प्रयोग किया है।

शब्दालंकारों का प्रयोग–

1 यमक अलंकार–

जहां शब्दों को साधन बना कर उक्ति चमत्कार हो वह शब्दालंकार कहलाता बिहारी ने अनेक दोहां में शब्दों के माध्यम से काव्य में चमत्कार उत्पन्न किया है। निम्न लिखित उदाहरण से स्वयं स्पष्ट हो जाएगा।

यमक अलंकार का निम्न लिखित उदाहरण बिहारी की अलंकार प्रियता का अच्छा उदाहरण है–

कनक कनक ते सौ गुणी मादकता अधिकाय। 4
उहिं खाएं बौराए जग इहिं पाएं बौराएं ।।

इस पद में सारा चमत्कार केवल एक शब्द पर आश्रित है। यहां अगर कनक की जगह उसका पर्याय रख दिया जाए तो सारा सौंदर्य नष्ट हो जाएगा। बिहारी ने शब्दालंकार के अन्तर्गत अनुप्रास का अधिक प्रयोग किया है इसके अतिरिक्त यमक श्लेष वक्रोक्ति आदि का भी प्रयोग उनके दोहों में है। कुछ और उदाहरण भी द्रष्टव्य हैं।

2. अनुप्रास अलंकार

रस सिंगार मंजनु किए कंजनु मंजनु दैन।:5
अंजनु रंजनु हूं बिना खंजनु गंजनु नैन।।

इस उदाहरण में कंजनु मंजनु खंजनु गंजनु आदि शब्दों में अनु प्रास के माध्यम से काव्य में सौंदर्य उत्पन्न हो गया है। समान स्वर और व्यंजन वाले शब्दों के अर्थ भिन्न भिन्न होने के कारण काव्यगत सौंदर्य दर्शनीय है।

3. श्लेष अलंकार – बिहारी अलंकार योजना में अद्वितीय हें। उनके दोहो में श्लेष अलंकार सामान्य रूप से पाया जाता है। जहां एक ही पद से दो या दो से अधिक अर्थ निकलते हों वहां श्लेष अलंकार होता हे। 6 श्लेष अलंकार का एक उदाहरण देखिए–

चिरंजीवी जोरी जुरै क्यों न सनेह गंभीर ।
को घटि ए वृष भानुजा वे हलधर के वीर।। 6

यहां वृषभानुजा शब्द के तीन अर्थ निकलते हैं। वृषभानु की पुत्री अर्थात् राधा वृषराशी में स्थित सूर्य की पुत्री तथा बैल की बहन अर्थात् गाय।इस तरह श्लेष के माध्यम से काव्य में चमत्कार उत्पन्न हो गया है।

4. वक्रोक्ति अलंकार – कथन में वक्रता ही वक्रोक्ति कहलाती है । बिहारी ने इस अलंकार का यथेष्ट प्रयोग किया है।इस उदाहरण में कवि का उक्ति वैचित्र्य उभर कर सामने आया है–

बंधु भए का दीन के को तार्‌यौ जदुराई ।7
रूठे रूठे फिरत हो झूठे विरद कहाई।।

अर्थालंकार–

अर्थ के द्वारा जहां काव्य में चमत्कार पैदा किया जाता है वहां अर्थालंकार होता है। शब्द विशेष की जगह पर उसके पर्याय रख देने से चमत्कार में कमी नहीं आती। उदाहरण देखिए–

चरण कमल बंदौं हरि राई ।

यहां किसी भी शब्द के स्थान पर अन्य शब्द रख देने से चमत्कार मे कोई कमी नहीं आ सकती।अर्थालंकारों में उपमा रूपक उत्प्रेक्षा व्यतिरेक अतिशयोक्ति आदि अलंकारों की गणना होती है। अर्थालंकारों को भी सात भागों में विभाजित किया गया है। औपम्यमूलक श्रृंखला मूलक न्यायमूलक गूढार्थप्रतीति मूलक व्यंग्यमूलक तथा रसाभिव्यंजना मूलक।

औपम्यमूलक अलंकारों में प्रमुखतः निम्न लिखित अलंकारों की गणना होती है–

5. उपमा अलंकार– बिहारी के दोहों में उपमा अलंकार आवश्यकतानुसार प्रयुक्त हुआ है–

सालती है नटसाल सी क्यों हूं निकसित नाहिं । 8
मनमथ नेता नोक सी खुभी खुभी जिय मांहि ।।

6. रूपक अलंकार–

फिरि फिरि चितु उतही रहतु टुटी लाज की लाब। 9
अंग अंग छबि झौर मैं भयो भौंर की नाव ।।

इस दोहे में लाज उपमेय पर लाव का आरोपण है तथा भौर पर नाव का आरोपण है।

7. उत्प्रेक्षा अलंकार –

बिहारी ने उत्प्रेक्षा अलंकार का प्रयोग भी सतसई में बडी ही सुन्दरता से किया है। उदाहरण देखिए–

मकराकृति गोपाल के सोहत कुण्डल कान । 10
मनौ धर्‌यौ हिय–पर समरू डयौढी लखत निशान।।

8. अतिशयोक्ति अलंकार–

निम्नलिखित दोहे में अतिशयोक्ति का सुन्दर उदाहरण है।गुलाब जल डालनेपर भी विरह की आग नहीं बुझती परन्तु प्रिय की बात कहने से बुझ जाती है।इस उदाहरण में घटना का बढा चढा कर वर्णन किया गया है।

याकैं उर और कछु लगी बिरह की लाई। 11
पजरै नीर गुलाब कै पिय की बात बुलाइ ।।

9. तुल्ययोगिता अलंकार–

इस दोहे में प्रस्तुतों तथा अप्रस्तुतों का योग संबंन्ध हैं।उदाहरण देखिए–

रूपसुधा–आवस छक्यौ आसव पियत बनै न। 12
प्यासी ओठ पियाबदन रह्यौ लगाए नैन।।

10. दीपक अलंकार–

निम्न लिखित दोहे में प्रस्तुत तथा अप्रस्तुत दोनों का एक ही धर्म कहा गया है।दीपक अलंकार का यह उदाहरण देखिए–

गढरचना बरूनी अलक चितवनि भौंह कमान। 13
आधु बंकाई ही चढे तरुनि तुरंगम तान।।

11. व्यतिरेक अलंकार –

जहां उपमान की अपेक्षा उपमेय की श्रेष्ठता व्यक्त की जाती है वहां व्यतिरेक अलंकार होता है। सतसई से एक उदाहरण देंखिए–

गिरि ते उंच रसिक मनु बडै जहां हजारु। 14

उहै सदा पसु नरन को प्रेम पयोधि पगारू।।

बिहारी ने कुछ वैषम्य मूलक अलंकारों का भी प्रयोग भी बहुत सुन्दर ढंग से किया ळें

12. विरोधाभास अलंकार –
जहां विरोध न होने पर विरोध का आभास हो वहां विरोधाभास अलंकार होता है।

तंत्रीनाद कवित्वरस सरस राग रति–रंग । 15
अनबूढे बूडे तिरे जे बूडे सब अंग ।।

13. विभावना अलंकार–
जहां बिना कारण–कार्य की उत्पत्ति का कार्य हो वहां विभावना अलंकार होता है।

जहौं जहौं ठाढौ लख्यौ स्याम सुभग सिरमौरु। 16
बिनहुं उन छिन गहि रहतु दृगनु अजो वह ठौरूं।।

14. विशेषोक्ति अलंकार–
जहा ंकारण के होते हुए भी कार्य के न होने का वर्णन किया जाए वहां विशेषोक्ति अलंकार होता है।

नेहू न नैननु को कछु उपजी बडी बलाई। 17
नीर भरे दिन–प्रति रहै तउ न प्यास बुझाइ।।

15. असंगति अलंकार –
क्वि बिहारी ने सतसई को हर तरह से संवारने का प्रयत्न किया है।उन्होंने हर तरह के अलंकारों का प्रयोग बडी ही सहजता से किया है।असंगति अलंकार का एक सुन्दर उदाहरण देखिए–

को जाने ओहै कहा ब्रज उपजी आगि। 18
मनु लागौ नैननु लगै चलै न मन लगि लाग।।

16. विषम अलंकार–
जहा ंविषमता का वर्णन किया जाए वहां विषम अलंकार होता है।उदाहरण देखिए–

लौंने मुंह दीठि न लगै यौ कहि दीनौ ईठि। 19
दूनी है लागन लगी दियै दिठौना दीठि ।।

इसी तरह एकावली एवं मालादीपक आदि अलंकारों का भी यथा स्थान प्रयोग कर के बिहारी ने यह प्रमाणित कर दिया है कि अलंकार योजना में वे सि़द्धहस्त कवि हैं।
न्यायमूलक अलंकारों का भी बिहारी ने खुल कर प्रयोग किया है। ऐसे कुछ अलंकारों का वर्णन इस प्रकार है–

17. काव्यलिंग अलंकार–
जहां किसी बात को सिद्धकरने के लिए कारण का समर्थन किया जाता है वहां काव्यलिंग अलंकार होता है। उदाहरण देखिए–

कनकु कनकु ते सौ गुनी मादकता अधिकाय। 20
उहिं खाएं बौराइ इहिं पाए बौराइ ।।

इसी तरह यथासंख्य आदि अलंकारों का भी प्रयोग सतसई में मिलता है।यह सत्य हैकि बिहारी रीतिकालीन कवि थे और उनका झुकाव अलंकारों की ओर गया फिर भी उन्होंने अलंकारों का बडे ही मनोवैज्ञानिक और स्वाभाविक रूप से किया हैं।अधिकांशतः अलंकार भावानुभूति में उत्कर्ष लाने वाले ही सिद्ध हुए हैं हठात् थोपे हुए नहीं। डॉ हरि नारायण यादव ने उचित लिखा हैकि– बिहारी की सतसई अलंकारों की मात्र चमक दमक से पूर्ण एक पिटारी ही नहीं है अपितु यह तो पाठकों को बरबस आकर्षित कर देने वाली विविध रसों की पिचकारी है।

संदर्भ सूचि–

1. अग्नि पुराण
2. आचार्य आनन्द वर्धनाचार्य - काव्य प्रकाश - पृ
3. आचार्य परशुराम चतुर्वेदी - उत्तरभारत की सन्त परम्परा
4. बिहारी रत्नाकर - श्री जगन्नाथदास रत्नाकर - दोहा संख्या 192
5. उपरोक्त - दोहा संख्या 46
6. उपरोक्त - दोहा संख्या 677
7. उपरोक्त - दोहा संख्या 61
8. उपरोक्त - दोहा संख्या 06
9. उपरोक्त - दोहा संख्या 670
10. उपरोक्त - दोहा संख्या 103
11. उपरोक्त - दोहा संख्या 48
12. उनरोक्त - दोहा संख्या 650
13. उपरोक्त - दोहा संख्या 316
14. उपरोक्त - दोहा संख्या 251
15. उपरोक्त - दोहा संख्या 94
16. उपरोक्त - दोहा संख्या 182
17. उपरोक्त - दोहा संख्या 37
18. उपरोक्त - दोहा संख्या151
19. उपरोक्त - दोहा संख्या 28
20. उपरोक्त - दोहा संख्या 192